ches are reviewed periodically, taking into account the current volume and nature of work.

हस्तशिल्पों के विकास के लिए निर्धारित लक्ष्य

2667. **श्री राजूभाई ए० परमार** : क्या **वस्त्र** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले वर्ष के दौरान हस्तशिल्पों के विकास के लिए क्या लक्ष्य निर्धारित किए गए थे ;

(ख) इन लक्ष्यों को किस सीमा तक पूरा किया गया है ;

(ग) क्या यह सच है कि हस्तशिल्प के विकास से संबंधित आंकड़े राज्यवार प्रस्तुत नहीं किए जाते हैं; और

(घ) यदि हां, तो इन आंकड़ों को एकत्र करने के आधार क्या हैं ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अशोक गहलोत) : (क) और (ख) एक विवरण संलग्न है। **(नीचे देखिये)**

(ग) जी हां।

(घ) निर्यात आंकड़े विभिन्न सीमा-शुल्क गृहों की दैनिक सूची से समेकित किए जाते हैं और उत्पादन तथा रोजगार संबंधी आंकड़े अखिल भारतीय आधार पर किए गए आकलन से लिए जाते हैं।

विवरण

(क) पिछले वर्ष के दौरान हस्तशिल्प के विकास के लिए निर्धारित लक्ष्य निम्नोक्त प्रकार है :—

वर्ष	उत्पादन (करोड़ रुपये में)	रोजगार (लाख व्यक्तियों में)	निर्यात (करोड़ रुपये में) रत्न तथा आभूषण को छोड़कर
1991—92 . . .	13260	48.25	1584.00

(ख) अनन्तिम आकलनों के अनुसार लक्ष्य को पूरा कर लिया गया है । हस्तशिल्प के निर्यात 1810 करोड़ रुपये (अनन्तिम) के हुए जो लक्ष्य से अधिक हैं।

Cotton Stocks in Andhra Pradesh

2668. DR. YELAMANCHILI SIVAJI: Will the Minister of TEXTILES be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a huge cotton stocks are lying with the growers of Guntur and Prakasam districts in Andhra Pradesh;

(b) if so, what is the quantity and what are the reasons for the present plight; and

(c) what steps Government propose to take in the matter?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF TEXTILES (SHRI ASHOK GEHLOT): (a) and (b) Kapas equivalent to about 50,000 to 75,000 bales is reported to be lying with cotton growers of Guntur and Prakasam districts of Andhra Pradesh. The reasons that could be attributed for this situation are non-disposal of stocks earlier in the season in anticipation of realising higher prices later in the season, low demand at present from the textile mills, the prices demanded by the cotton growers now being not commensurate with its qualtiy, etc.